आवश्यक पहलू सिंचाई है । वर्षा काल के समय सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती, परन्तु वर्षा न होने पर बाकी दिना में 2-3 दिन के अंतराल में पानी देना आवश्यक है ताकि खेतों में हमेशा नमी बनी रहे । विशेषत: इसकी खेती नमी युक्त स्थान, दलदली भूमि, पोखरों, नदी-नालों, नहरों तालाबों के किनारों जहाँ हर समय पानी भरा हो वहाँ लेना लाभप्रद होता है। अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिये खरपतवार पर नियंत्रण तथा जमीन पर वायु विनमय के लिये समय-समय पर निदाई आवश्यकतानुसार करते रहना चाहिये । बच की फसल 6-8 माह में तैयार होती है । लगभग दिसंबर-जनवरी माह में पत्तियों का वायवीय भाग पीले पड़ने लगे तब पौधों को जड़ समेत जमीन से खोदकर निकाल लें तथा राइजोम को अलग कर लें। राइजोम को अच्छी तरह पानी से धोकर साफ कर छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर छायादार जगह में सुखा लें। तेज धूप में न सुखायें जिससे इसमें उपस्थित तेल की मात्रा का नुकसान न हो।

आर्थिकी

उपज प्रति हेक्ट.	-	40-42 क्विंटल सूखी जड़ें
व्यय प्रति हेक्ट.	-	रु. 35000/-
विक्रय मूल्य	-	रु. 2000/- प्रति क्विंटल
आय	-	रु. 84,400/- प्रति हेक्टेयर
शुद्ध लाभ	-	रु. 40,000/- प्रति हेक्टेयर

•••

एस.एफ.आर.आई. प्रचार पत्रिका - 20

बच
(एकोरस केलेमस)

जैव विविधता एवं
औषधी पौध शाखा

म.प्र. राज्य वन अनुसंधान
संस्थान, जबलपुर

2001

बच
(एकोरस केलेगस)

बच ऐरेसी कुल का पौधा है, जो घोड़बच के नाम से भी प्रचलित है । आयुर्वेदिक एवं यूनानी दवाओं में इसका उपयोग प्रचुरता से किया जाता है । इस कारण देश-विदेश के बाजारों में इसकी बहुत मांग है । भारत वर्ष में मुख्य रूप से यह हिमाचल प्रदेश, मिजोरम, आसाम, पश्चिम बंगाल, मध्यप्रदेश, बिहार आदि प्रदेशों में प्राकृतिक रूप से पाया जाता है । मध्यप्रदेश में अत्यधिक विदोहन के कारण अब यह दुर्लभ प्रजाति की श्रेणी में आ पहुँची है । इसका आवास नदी-नालों के किनारों, दलदली भूमि एवं गीले नमी युक्त स्थानों में पाया जाता है ।

आकारिकी (मॉरफोलाजी)

बच का पौधा बहुशाखित व भूमिगत तने युक्त लगभग 1-2 फुट ऊंचा होता है । पत्तियाँ रेखाकार, भालाकार, नुकीली, मोटी, मध्यशिरा युक्त हरे रंग की होती है । पुष्प-क्रम 4.8 सेमी. का स्पेडिक्स, हरे पीले रंगे के फूल, हरापन लिये पीले होते हैं । फल लाल व गोल होते हैं । जड़ें भूमिगत भूरे-पीले रंग की गांठ युक्त, तीव्र गंध युक्त होती है ।

उपयोगी भाग एवं औषधीय गुण

इसका उपयोगी भाग गांठ युक्त जड़ें होती हैं, जिससे 'एकोरिन' नामक तेल प्राप्त होता है । तेल गेस्ट्रिक, श्वासरोगों, बदहजमी, दस्त, मूत्र एवं गर्भ रोगों, हिस्टीरिया एवं खांसी इत्यादि रोगों में प्रयुक्त होता है । बच से बाजार में विभिन्न आयुर्वेदिक कंपनियों द्वारा बनाई गई दवायें जैसे एन्तो स्प्रे पाउडर, लीवोवेल सिरप, गैलाकोल, सिलेडिन, सूकतिम एवं नेड टेबलेट आदि उपलब्ध है ।

कृषि तकनीक

बच की खेती के लिये उपयुक्त जलवायु आर्द्र, नमीयुक्त, तापमान 10 से.ग्रे. से 38 से.ग्रे. तथा वार्षिक वर्षा 70 सेमी. से 250 सेमी. तक हो । काली या दोमट मिट्टी दलदली एवं उत्तम सिंचाई की व्यवस्था हो । बच की फसल राइजोम (कंदिल भाग) की कटिंग के माध्यम से जुलाई माह में करना उपयुक्त होता है । भूमि की तैयारी में वर्षा पूर्व 2-3 बार जुताई कर लें तथा भूमि को दलदली सा बनाया जाये तो उपयुक्त होगा । पुराने राईजोम को भूमि में दबा दें जहां लगातार नमी बनी हो । नये अंकुरण आने पर कटिंग द्वारा प्लांटिंग मटेरियल तैयार करें तथा इनका रोपण किया जावे । काटे गये राइजोम को 30 x 30 सेमी. अंतराल में मिट्टी में लगभग 2 से.मी. अंदर जुलाई से अगस्त माह में लगाते हैं । प्रति हेक्टेयर 1, 11, 111 पौधे लगते हैं । रोपाई के तुरंत बाद आवश्यक पानी देते हैं । लगभग 15 टन गोबर खाद/ हेक्ट. रोपाई से पहले अच्छी फसल के लिये भूमि में मिला लें । बच की कृषि का सर्वाधिक